पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (WBBSE)

कक्षा 7 हिंदी

अध्याय 3

भारत वर्ष

प्रश्न बैंक

birlaeducation.org

कक्षा 7 की कोई बोर्ड परीक्षा नहीं होती; यह प्रश्न बैंक पाठ्यपुस्तक और अध्याय के विषयों पर आधारित है

बिरला एजुकेशन

अध्याय 3: भारत वर्ष

रचयिता: जयशंकर प्रसाद

अध्याय का सार

कवि भारत के प्राचीन गौरव का चित्रण करता है। हिमालय की गोद में ज्ञान की पहली किरणें फूटीं, सरस्वती की वीणा से संगीत के सात स्वर निकले, मनु ने सृष्टि को बचाया, दधीचि ने अस्थिदान किया, राम ने सेतु बनाकर रावण को हराया, बुद्ध और महावीर ने अहिंसा का संदेश दिया, अशोक भिक्षु बनकर घूमे और चंद्रगुप्त ने सेल्युकस को हराकर भी प्राणदान दिया। भारतवासी परोपकारी, अतिथि-सेवी, दृढ़-प्रतिज्ञ और शांति के हिमायती रहे हैं।

भावार्थ

हमारे संचय में था दान अतिथि थे सदा हमारे देव।

यह अंश कविवर जयशंकर प्रसाद की रचना भारतवर्ष कविता से उद्धृत है। इस पंक्ति में कवि ने अतीत में भारतीयों की दानशीलता तथा उदारता का चित्रण किया है। हमारे पूर्वज अपने सुख के लिए और भोग की कामना के लिए धन-संचय नहीं करते थे। अपने अर्जित धन से गरीबों और अनाथों को दान देकर उनकी सहायता करते थे। उनमें परोपकार की भावना थी। अतिथियों का देवतुल्य सत्कार करते थे। वे सच्चे अर्थों में अतिथि-सेवी थे। अतिथि देवो भव उनका सिद्धांत था।

birlaeducation.org

बचाकर बीज रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय की शीत।

हमारे आदि पुरुष ने बीज रूप में सृष्टि की रक्षा की। प्रलय के समय सब कुछ जलमग्न हो गया। अकेले मनु एक नाव में बैठकर हिमालय की चोटी पर पहुँच गए। प्रलय-कालीन शीत लहरी को सहकर भी निडर बने रहे। श्रद्धा के सहयोग से उन्होंने सृष्टि को बचाया।

जिएँ तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष।

यह अंश भारतवर्ष कविता से उद्धृत है। इसके कवि श्री जयशंकर प्रसाद हैं। यहाँ कवि की राष्ट्रीय भावना तथा देश-प्रेम की इच्छा व्यक्त हुई है। कवि का कथन है कि हमारा जीवन स्वदेश भारतवर्ष के लिए है। अतः हम जिएँ तो भारत के लिए और मरें तो भारत के लिए। हमें इस बात का अभिमान तथा हर्ष होना चाहिए कि हमारा जीवन अपने देश के लिए ही है। हमें स्वदेश के लिए अपना तन, मन, धन अर्थात् सर्वस्व अर्पण कर देने के लिए सदैव प्रस्तुत रहना चाहिए।

लेखक/कवि परिचय

जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 ई० में काशी में हुआ था। वे छायावाद के प्रमुख कवि थे। उनकी मृत्यु 1937 ई० में हुई। उनकी कविता भारतवर्ष में भारत के प्राचीन गौरव, भारतीयों की दानशीलता, अतिथि-सेवा और देश-प्रेम का चित्रण है। लेखक का यह परिचय समाधान साइट पर आधारित है, छपी हुई पुस्तक से इसकी पुष्टि अभी बाकी है।

कठिन शब्द

शब्द	अर्थ
आँगन	प्रांगण
किरण	रश्मि
हीरक	हीरा
व्योम	आकाश
तम पुंज	अंधकार का समूह
आलोक	प्रकाश
अखिल	संपूर्ण, समस्त
संसृति	संसार, सृष्टि
रत्नाकर	सागर, समुद्र
पुरन्दर	इन्द्र
संचय	संग्रह
सर्वस्व	सबकुछ

birlaeducation.org

समूह A: बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ), 12 प्रश्न

सही विकल्प को गहरे (बोल्ड) अक्षरों में दिखाया गया है।

1. निर्वासित राजकुमार कौन थे? पाठ्यपुस्तक

(क) अशोक

(ख) राम

(ग) दधीचि

(घ) सिद्धार्थ

उत्तर: (ख) राम।

---

2. भारतवर्ष कविता के कवि हैं पाठ्यपुस्तक

(क) रामधारी सिंह दिनकर

(ख) रामनरेश त्रिपाठी

(ग) जयशंकर प्रसाद

(घ) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

उत्तर: (ग) जयशंकर प्रसाद।

---

3. रत्नाकर का शाब्दिक अर्थ है पाठ्यपुस्तक

(क) गागर

(ख) सागर

(ग) नदी

(घ) रत्न का आकार

उत्तर: (ख) सागर।

birlaeducation.org

---

4. दधीचि कौन थे? पाठ्यपुस्तक

(क) एक राजा

(ख) बौद्ध भिक्षु

(ग) एक ऋषि

(घ) एक भिखारी

उत्तर: (ग) एक ऋषि।

---

5. जयशंकर प्रसाद का जन्म कहाँ हुआ था? पाठ्यपुस्तक

(क) इलाहाबाद

(ख) काशी

(ग) महिषादल

(घ) दरभंगा

उत्तर: (ख) काशी।

---

6. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब हुआ था? पाठ्यपुस्तक

(क) सन् 1889 में

(ख) सन् 1890 में

(ग) सन् 1891 में

(घ) सन् 1888 में

उत्तर: (क) सन् 1889 में।

---

7. जयशंकर प्रसाद के पूर्वज किस नाम से प्रसिद्ध थे? पाठ्यपुस्तक

(क) मुरली बाबू

(ख) सुंघनी साहू

(ग) मंगला बाबू

(घ) जीवन बाबू

उत्तर: (ख) सुंघनी साहू।

---

8. जयशंकर प्रसाद किस वाद के कवि हैं? पाठ्यपुस्तक

(क) छायावाद

(ख) प्रगतिवाद

(ग) प्रयोगवाद

(घ) जनवाद

उत्तर: (क) छायावाद।

---

birlaeducation.org

9. हिमालय का आँगन किस देश को कहा गया है? पाठ्यपुस्तक

(क) भारतवर्ष

(ख) श्रीलंका

(ग) नेपाल

(घ) भूटान

उत्तर: (क) भारतवर्ष।

---

10. किसने पहनाया हीरक हार? पाठ्यपुस्तक

(क) तम ने

(ख) उषा ने

(ग) मोहन ने

(घ) साहेब ने

उत्तर: (ख) उषा ने।

---

11. महर्षि दधीचि ने देवराज इन्द्र को क्या दान दिया? पाठ्यपुस्तक

(क) हड्डियाँ

(ख) रत्न

(ग) देवलोक

(घ) जल

उत्तर: (क) हड्डियाँ।

---

12. पुरन्दर किसे कहा जाता है? अतिरिक्त

(क) राम को

(ख) इन्द्र को

(ग) मनु को

(घ) अशोक को

उत्तर: (ख) इन्द्र को।

समूह B: रिक्त स्थान भरिए, 10 प्रश्न

1. हिमालय का संधि विच्छेद _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: हिम + आलय

---

2. संसृति का संधि विच्छेद _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सम् + सृति

birlaeducation.org

---

3. निर्वासित का संधि विच्छेद _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: निः + वासित

---

4. संचय का संधि विच्छेद _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सम् + चय

---

5. रत्नाकर का संधि विच्छेद _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: रत्न + आकर

---

6. सप्त स्वर का समास विग्रह _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सात स्वरों का समाहार

---

7. उत्थान-पतन में _____ समास है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: द्वन्द्व

---

8. इत प्रत्यय से बना शब्द _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: निर्वासित

9. ता प्रत्यय से बना एक शब्द _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: जातीयता

10. निर्वासित में उपसर्ग _____ है। अतिरिक्त

उत्तर: निः

ध्यान दें: पाठ्यपुस्तक का भाषा-बोध (क) अभ्यास केवल छवि में दिया गया था, इसलिए उसका मूल प्रश्न यहाँ नहीं रखा गया है। उसके स्थान पर उसी विषय, उपसर्ग, पर यह नया प्रश्न रखा गया है।

समूह C: सत्य / असत्य, 10 प्रश्न

1. भारतवर्ष कविता के कवि जयशंकर प्रसाद हैं। अतिरिक्त

उत्तर: सत्य

2. रत्नाकर का अर्थ नदी है। अतिरिक्त

उत्तर: असत्य

birlaeducation.org

3. दधीचि एक ऋषि थे। अतिरिक्त

उत्तर: सत्य

4. जयशंकर प्रसाद का जन्म इलाहाबाद में हुआ था। अतिरिक्त

उत्तर: असत्य

5. जयशंकर प्रसाद छायावाद के कवि हैं। अतिरिक्त

उत्तर: सत्य

6. हिमालय का आँगन नेपाल को कहा गया है। अतिरिक्त

उत्तर: असत्य

7. दधीचि ने इन्द्र को अपनी हड्डियाँ दान दी थीं। अतिरिक्त

उत्तर: सत्य

8. निर्वासित राजकुमार अशोक थे। अतिरिक्त

उत्तर: असत्य

9. उषा ने भारत को हीरक हार पहनाया। अतिरिक्त

उत्तर: सत्य

10. जयशंकर प्रसाद की मृत्यु 1937 ई० में हुई थी। अतिरिक्त

उत्तर: सत्य

समूह D: लघु उत्तरीय प्रश्न (SAQ), 20 प्रश्न

उत्तर 3 से 5 पंक्तियों में लिखिए।

1. दधीचि ने क्या दान किया था तथा क्यों? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: दधीचि ने अस्थि दान किया था। उनकी हड्डी से इन्द्र ने वज्र का निर्माण कर वृत्रासुर का वध किया। अतः देवताओं की विजय तथा असुरों की पराजय के लिए दधीचि ने अपनी हड्डियों का दान किया।

2. बौद्ध भिक्षु बनकर घूमनेवाले राजा कौन थे? इसका कारण क्या था? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: बौद्ध भिक्षु बनकर घूमने वाले राजा अशोक थे। बौद्ध धर्म के प्रचार तथा मानवता के कल्याण के लिए सम्राट अशोक घर-घर जाकर दीन-दुखियों के प्रति दया तथा करुण भावना व्यक्त करते थे।

biharaducation.org

3. निर्वासित राजा की प्रसिद्धि का क्या कारण है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: निर्वासित राजकुमार राम ने रावण का विनाश करने के लिए तथा देवताओं, ऋषियों और मानवता के संकट को दूर करने के लिए सागर की छाती पर सेतु का निर्माण तथा रावण को पराजित कर देव-संस्कृति की रक्षा की। यही उनकी प्रसिद्धि का कारण है।

4. हिमालय का आँगन किसे और क्यों कहा गया है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: हिमालय का आँगन भारतवर्ष को कहा गया है, क्योंकि भारत हिमालय के चरणों में स्थित है। हिमालय भारत का गौरव है। हिमालय का सांस्कृतिक महत्त्व है।

5. जयशंकर प्रसाद की मृत्यु कब हुई? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: जयशंकर प्रसाद की मृत्यु 1937 ई० में हुई थी।

6. जयशंकर प्रसाद के पिता का क्या नाम था? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: जयशंकर प्रसाद के पिता का नाम सुंघनी साहू था।

7. सृष्टि का बीज किसने बचाया? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सृष्टि का बीज मनु ने बचाया।

---

8. पुरन्दर किसे कहा जाता है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: पुरन्दर इन्द्र को कहा जाता है।

---

9. पुरन्दर का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: पुरन्दर का अर्थ है इन्द्र। वाक्य: पुरन्दर ने वज्र से वृत्रासुर का वध किया।

---

10. रत्नाकर का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: रत्नाकर का अर्थ है समुद्र। वाक्य: राम ने रत्नाकर की छाती पर पुल बना दिया।

---

11. सर्वस्व का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सर्वस्व का अर्थ है सबकुछ। वाक्य: हमें स्वदेश पर सर्वस्व न्योछावर कर देना चाहिए।

---

12. नम्रता का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: नम्रता का अर्थ है विनय। वाक्य: हमारे पूर्वजों में सदा नम्रता बनी रही।

---

13. अभिनंदन का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए। पाठ्यपुस्तक

birlaeducation.org

उत्तर: अभिनंदन का अर्थ है प्रशंसा, स्वागत। वाक्य: हमें महान पुरुषों का अभिनंदन करना चाहिए।

---

14. भारतवर्ष कविता के कवि कौन हैं? अतिरिक्त

उत्तर: भारतवर्ष कविता के कवि जयशंकर प्रसाद हैं।

---

15. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब और कहाँ हुआ था? अतिरिक्त

उत्तर: जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 ई० में काशी में हुआ था।

---

16. जयशंकर प्रसाद किस वाद के कवि हैं? अतिरिक्त

उत्तर: जयशंकर प्रसाद छायावाद के कवि हैं।

---

17. रत्नाकर का शाब्दिक अर्थ क्या है? अतिरिक्त

उत्तर: रत्नाकर का शाब्दिक अर्थ है सागर।

---

18. हीरक हार किसने पहनाया? अतिरिक्त

उत्तर: उषा ने हीरक हार पहनाया।

---

19. दधीचि कौन थे? अतिरिक्त

उत्तर: दधीचि एक ऋषि थे।

---

20. निर्वासित राजकुमार कौन थे? अतिरिक्त

उत्तर: निर्वासित राजकुमार राम थे।

ध्यान दें: सुंघनी साहू के बारे में स्रोतों में विरोध है। समूह A के प्रश्न 7 में उन्हें जयशंकर प्रसाद के पूर्वज कहा गया है, और समूह D के प्रश्न 6 के उत्तर में उन्हें उनके पिता कहा गया है। दोनों शब्द यहाँ जैसे छपे हैं वैसे ही रखे गए हैं। सही संबंध की पुष्टि छपी हुई पुस्तक से की जानी है।

समूह E: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ), 20 प्रश्न

उत्तर विस्तार से लिखिए।

1. भारत के प्राचीन गौरव का वर्णन कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कविवर जयशंकर प्रसाद ने भारतवर्ष कविता में भारत के अतीत का गौरवमय चित्रण किया है। सर्वप्रथम हिमालय की गोद में स्थित भारत में ही सभ्यता और ज्ञान की किरणें फूटीं। संगीत के सात स्वरों को सरस्वती ने वीणा के तारों से झंकृत किया। सामवेद की रचना इसी भारत-भूमि में हुई। हमारे आदि पुरुष मनु ने बीज रूप में सृष्टि को बचाया। महर्षि दधीचि का अस्थिदान हमारी जातीयता के विकास का उदाहरण है। उनकी अस्थि से देवराज इन्द्र ने वज्र बनाकर वृत्रासुर का वध किया। इस प्रकार देव-संस्कृति की रक्षा हुई। निर्वासित होते हुए भी श्रीराम ने राक्षसी संस्कृति के विनाश तथा रावण को पराजित करने हेतु समुद्र पर सेतु का निर्माण कर दिया। भगवान बुद्ध और महावीर ने धर्म के नाम पर हो रही नर-बलि तथा पशु-बलि को समाप्त कर विश्व को शांति और अहिंसा का संदेश दिया। भारतीय वीरों ने तलवार के द्वारा विजय के स्थान पर धर्म और प्रेम की विजय को विश्व में प्रचारित किया। सम्राट अशोक भिक्षु बनकर घूम-घूमकर शांति, अहिंसा और प्रेम का प्रचार करते रहे। सम्राट चन्द्रगुप्त ने युद्ध में यवन सेनापति सेल्युकस को पराजित करके भी उसे प्राणदान देकर अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। हमारे पूर्वज भारतवासी चरित्रवान, शक्तिशाली, दृढ़-प्रतिज्ञ तथा परोपकारी थे। शक्ति-संपन्न होकर भी विनम्र थे।

---

2. पुरंदर ने पवि से है लिखा अस्थियुग का मेरे इतिहास में वर्णित इस पौराणिक कथा का वर्णन कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: देवासुर संग्राम की घटना का युग अस्थियुग था। देवताओं के राजा इन्द्र संग्राम में असुरों के सेनापति वृत्रासुर से भयभीत थे। ब्रह्मा के निर्देश से वे महर्षि दधीचि के पास आए, क्योंकि दधीचि की हड्डियों से निर्मित अस्त्र से ही वृत्रासुर का वध हो सकता था। राक्षसराज वृत्रासुर के संहार के लिए देवराज इन्द्र ने महर्षि दधीचि से अस्थिदान की माँग की। महर्षि ने देवत्व की रक्षा के लिए सहर्ष इन्द्र का प्रस्ताव स्वीकार कर प्राण त्यागकर अपनी हड्डियाँ दे दीं। इन्द्र ने उनकी अस्थि से वज्र का निर्माण कर राक्षसराज वृत्रासुर का संहार किया। दधीचि का यह अस्थि-त्याग भारतीय जाति के त्याग का अनुपम उदाहरण है।

---

3. भारतवर्ष कविता का मूल सार अपने शब्दों में लिखिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: प्रसादजी ने प्रस्तुत कविता में भारत के अतीत का गौरव और भारतीयों की जातीय तथा चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया है। सर्वप्रथम उषा ने हिमालय की गोद में स्थित भारत को अपनी स्वर्णिम किरणों का उपहार दिया। सर्वप्रथम भारतवासी ही ज्ञान-संपन्न हुए और विश्व के अन्य भागों में भी ज्ञान का विस्तार और प्रसार किए। हमारे आदि पुरुष मनु ने प्रलय से सृष्टि को बचाया। यहीं पर सरस्वती की वीणा के तारों से संगीत के सातों स्वर फूटे। सामवेद की रचना इसी भारत-भूमि में हुई। महर्षि दधीचि ने अस्थिदान देकर राक्षसराज वृत्रासुर का संहार किया था। राजकुमार राम ने सागर की छाती पर सेतु का निर्माण कर

bihareducation.org

रावणत्व का समूल नाश किया। भगवान बुद्ध तथा स्वामी महावीर ने पशु-बलि प्रथा को बन्द कर विश्व को प्रेम, शांति और अहिंसा का उपदेश दिया। सम्राट अशोक ने भिक्षु बनकर घर-घर जाकर दया और करुणा का पाठ पढ़ाया। सम्राट चन्द्रगुप्त ने रणक्षेत्र में यवन सेनापति सेल्युकस को पराजित करके भी प्राणदान दे दिया। हमने चीन को धर्म-दृष्टि, लंका तथा सिंहल को शील की शिक्षा दी। जातियों का उत्थान-पतन यहाँ होता रहा। विदेशियों के बर्बर आक्रमणों को झेलते हुए भी हम अडिग बने रहे। हमारी जन्मभूमि यही है, हम कहीं बाहर से नहीं आए हैं। हमने किसी का कुछ भी छीना नहीं। हम परोपकारी, अतिथि-सेवी, दृढ़-प्रतिज्ञ, साहसी तथा शांति के हिमायती रहे। हम भारत के गौरव की रक्षा के लिए सर्वस्व त्याग के लिए प्रस्तुत रहेंगे। इस प्रकार इस कविता में देश-प्रेम तथा राष्ट्रीय भावना का चित्रण हुआ है।

---

4. हमारे संचय में था दान अतिथि थे सदा हमारे देव। ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: यह अंश कविवर जयशंकर प्रसाद की रचना भारतवर्ष कविता से उद्धृत है। इस पंक्ति में कवि ने अतीत में भारतीयों की दानशीलता तथा उदारता का चित्रण किया है। हमारे पूर्वज अपने सुख के लिए और भोग की कामना के लिए धन-संचय नहीं करते थे। अपने अर्जित धन से गरीबों और अनाथों को दान देकर उनकी सहायता करते थे। उनमें परोपकार की भावना थी। अतिथियों का देवतुल्य सत्कार करते थे। वे सच्चे अर्थों में अतिथि-सेवी थे। अतिथि देवो भव उनका सिद्धांत था।

---

5. बचाकर बीज रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय की शीत। ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: हमारे आदि पुरुष ने बीज रूप में सृष्टि की रक्षा की। प्रलय के समय सब कुछ जलमग्न हो गया। अकेले मनु एक नाव में बैठकर हिमालय की चोटी पर पहुँच गए। प्रलय-कालीन शीत लहरी को सहकर भी निडर बने रहे। श्रद्धा के सहयोग से उन्होंने सृष्टि को बचाया।

birlaeducation.org

---

6. जिएँ तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष। ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: यह अंश भारतवर्ष कविता से उद्धृत है। इसके कवि श्री जयशंकर प्रसाद हैं। यहाँ कवि की राष्ट्रीय भावना तथा देश-प्रेम की इच्छा व्यक्त हुई है। कवि का कथन है कि हमारा जीवन स्वदेश भारतवर्ष के लिए है। अतः हम जिएँ तो भारत के लिए और मरें तो भारत के लिए। हमें इस बात का अभिमान तथा हर्ष होना चाहिए कि हमारा जीवन अपने देश के लिए ही है। हमें स्वदेश के लिए अपना तन, मन, धन अर्थात् सर्वस्व अर्पण कर देने के लिए सदैव प्रस्तुत रहना चाहिए।

---

7. दधीचि के त्याग को कवि ने जातीयता का विकास क्यों कहा है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: दधीचि एक महान त्यागी-तपस्वी ऋषि थे। भारत के इतिहास में वह युग अस्थियुग था। देवराज इन्द्र असुरों के सेनापति वृत्रासुर से संत्रस्त थे। उसे पराजित करने के लिए इन्द्र दधीचि ऋषि के पास जाकर उनसे उनकी अस्थियों (हड्डियों) की याचना की। देव-जाति की रक्षा के लिए महर्षि दधीचि अपनी अस्थियों का दान देकर अनुपम त्याग का परिचय दिया। दधीचि की अस्थियों से वज्र बनाकर इन्द्र ने वृत्रासुर का वध कर देव-जाति की रक्षा की। इस प्रकार इन्द्र ने अस्थियुग के इतिहास को वज्र से लिखा। ऋषि दधीचि के इस अनुपम त्याग और बलिदान से स्पष्ट हो जाता है कि उस युग में सामाजिक स्तर पर भारतीय जाति कितनी विकसित, कितनी महान तथा आदर्शमयी थी।

---

8. कवि ने भारत को प्रकृति का पालना क्यों कहा है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: हमारा देश प्राकृतिक शोभा तथा सुषमा का आँगन है। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता निराली है। पर्वतों, वन-प्रदेशों, नदियों तथा शस्य-श्यामला धरती का सौन्दर्य अतीव मोहक एवं निराला है। षड्ऋतुओं की शोभा अपने आप में चित्ताकर्षक है। इसीलिए कवि ने इसे प्रकृति का पालना कहा है।

---

9. पाठ में आए पौराणिक तथा ऐतिहासिक पुरुषों का उल्लेख कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: मनु: पौराणिक कथाओं के अनुसार मनु हमारे आदि पुरुष हैं। प्रलय-काल में सृष्टि के जलमग्न हो जाने पर मनु एक नाव पर सवार हो गए। उनकी नाव उस बाढ़ में उत्तर गिरि से टकराई। वहाँ उतरकर मनु ने श्रद्धा के संपर्क से बीज रूप में सृष्टि को बचाया। पुरन्दर (इन्द्र): ये देवताओं के अधिपति तथा स्वर्ग के राजा थे। देवासुर संग्राम में वे देव-जाति के सेनापति थे। वृत्रासुर का वध कर इन्होंने देव-जाति की रक्षा की। राम: अयोध्यापति महाराज दशरथ के पुत्र राम भगवान के अवतार माने जाते हैं। निर्वासित होते हुए भी राम ने सागर की छाती पर सेतु का निर्माण कर रावण को समाप्त कर देवत्व की रक्षा की। बुद्ध: कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन के पुत्र राजकुमार गौतम ज्ञान-प्राप्ति के बाद भगवान बुद्ध कहलाए। ज्ञान-प्राप्ति के बाद इन्होंने अपना पहला उपदेश सारनाथ (वाराणसी) में दिया। अशोक: ये भारत के प्रसिद्ध सम्राट थे। प्रजा की भलाई के लिए इन्होंने अनेक कल्याणकारी योजनाओं को मूर्त रूप दिया। बौद्ध धर्म स्वीकार कर ये भिक्षु बनकर करुणा, दया तथा प्रेम का संदेश देने लगे। चन्द्रगुप्त: चन्द्रगुप्त भारत के प्रतापी सम्राट थे। महान नीतिज्ञ चाणक्य के शिष्य थे। सम्राट अशोक इनके पौत्र थे। चन्द्रगुप्त यवन सेनापति सेल्युकस को युद्ध में पराजित कर उसे प्राणदान दिया। सेल्युकस की पुत्री राजकुमारी हेलेन (कार्नेलिया) से शादी की। इस प्रकार उन्होंने यवन को दया का दान दिया।

---

10. मनु ने सृष्टि को कैसे बचाया? कथा का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

biharboardeducation.org

उत्तर: प्रलय के समय सब कुछ जलमग्न हो गया था। हमारे आदि पुरुष मनु अकेले एक नाव में बैठकर हिमालय की चोटी पर पहुँच गए। उन्होंने प्रलय-कालीन शीत लहरी को सहकर भी निडर बने रहे और श्रद्धा के सहयोग से बीज रूप में सृष्टि को बचाया। इसीलिए मनु को सृष्टि का रक्षक कहा जाता है।

---

11. राम ने सागर पर सेतु बनाकर रावण को कैसे हराया? लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: निर्वासित होते हुए भी राम ने राक्षसी संस्कृति के विनाश और रावण को पराजित करने के लिए सागर की छाती पर सेतु का निर्माण किया। सेतु बनाकर वे लंका पहुँचे, रावण को पराजित किया और देव-संस्कृति की रक्षा की। यही उनकी प्रसिद्धि का कारण है।

---

12. बुद्ध और महावीर ने विश्व को क्या संदेश दिया? अतिरिक्त

उत्तर: बुद्ध और महावीर ने धर्म के नाम पर हो रही नर-बलि तथा पशु-बलि को समाप्त किया। उन्होंने विश्व को शांति, अहिंसा और प्रेम का संदेश दिया। उनके उपदेशों से मानवता को दया और करुणा का मार्ग मिला।

---

13. सम्राट अशोक भिक्षु बनकर क्या करते थे? अतिरिक्त

उत्तर: सम्राट अशोक बौद्ध धर्म के प्रचार तथा मानवता के कल्याण के लिए भिक्षु बनकर घूमते थे। वे घर-घर जाकर दीन-दुखियों के प्रति दया तथा करुण भावना व्यक्त करते थे और शांति, अहिंसा और प्रेम का प्रचार करते थे।

---

14. चंद्रगुप्त ने सेल्युकस को हराकर भी प्राणदान क्यों दिया? अतिरिक्त

उत्तर: चंद्रगुप्त ने युद्ध में यवन सेनापति सेल्युकस को पराजित किया, पर वे शक्ति-संपन्न होकर भी विनम्र थे। उन्होंने शत्रु को भी प्राणदान देकर भारतीयों की दया और उदारता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

---

15. अतिथि देवो भव का क्या अर्थ है? भारतीयों की अतिथि-सेवा पर प्रकाश डालिए। अतिरिक्त

उत्तर: अतिथि देवो भव का अर्थ है कि अतिथि देवता के समान है। हमारे पूर्वज अतिथियों का देवतुल्य सत्कार करते थे। वे सच्चे अर्थों में अतिथि-सेवी थे और अपने अर्जित धन से गरीबों और अनाथों की सहायता करते थे।

---

16. भारतवासियों की दानशीलता का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

उत्तर: हमारे पूर्वज अपने सुख के लिए और भोग की कामना के लिए धन-संचय नहीं करते थे। अपने अर्जित धन से वे गरीबों और अनाथों को दान देकर उनकी सहायता करते थे। उनमें परोपकार की भावना थी और दान देना ही उनका संचय था।

---

17. भारत के प्राचीन निवासियों की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: भारत के प्राचीन निवासी चरित्रवान, शक्तिशाली, दृढ़-प्रतिज्ञ तथा परोपकारी थे। वे शक्ति-संपन्न होकर भी विनम्र थे। वे अतिथि-सेवी, साहसी और शांति के हिमायती थे। उन्होंने किसी का कुछ भी नहीं छीना और सदा प्रेम तथा धर्म की विजय का प्रचार किया।

---

18. भारत की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

उत्तर: भारत प्राकृतिक शोभा तथा सुषमा का आँगन है। यहाँ पर्वतों, वन-प्रदेशों, नदियों तथा शस्य-श्यामला धरती का सौन्दर्य अतीव मोहक एवं निराला है। षड्ऋतुओं की शोभा अपने आप में चित्ताकर्षक है। इसीलिए कवि ने भारत को प्रकृति का पालना कहा है।

birlaeducation.org

---

19. कविता में व्यक्त देश-प्रेम की भावना को स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

उत्तर: कवि कहता है कि हमारा जीवन स्वदेश भारतवर्ष के लिए है। हम जिएँ तो भारत के लिए और मरें तो भारत के लिए। हमें इस बात का अभिमान तथा हर्ष होना चाहिए कि हमारा जीवन अपने देश के लिए ही है। भारत के गौरव की रक्षा के लिए हमें सर्वस्व त्याग के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए।

---

20. भारत के गौरव की रक्षा के लिए हमें क्या करना चाहिए? अपने शब्दों में लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: भारत के गौरव की रक्षा के लिए हमें परोपकारी, अतिथि-सेवी, दृढ़-प्रतिज्ञ और शांति के हिमायती बनना चाहिए। हमें अपने देश के लिए तन, मन और धन समर्पित करने के लिए सदा प्रस्तुत रहना चाहिए और देश के प्राचीन गौरव को याद रखकर आगे बढ़ना चाहिए।
